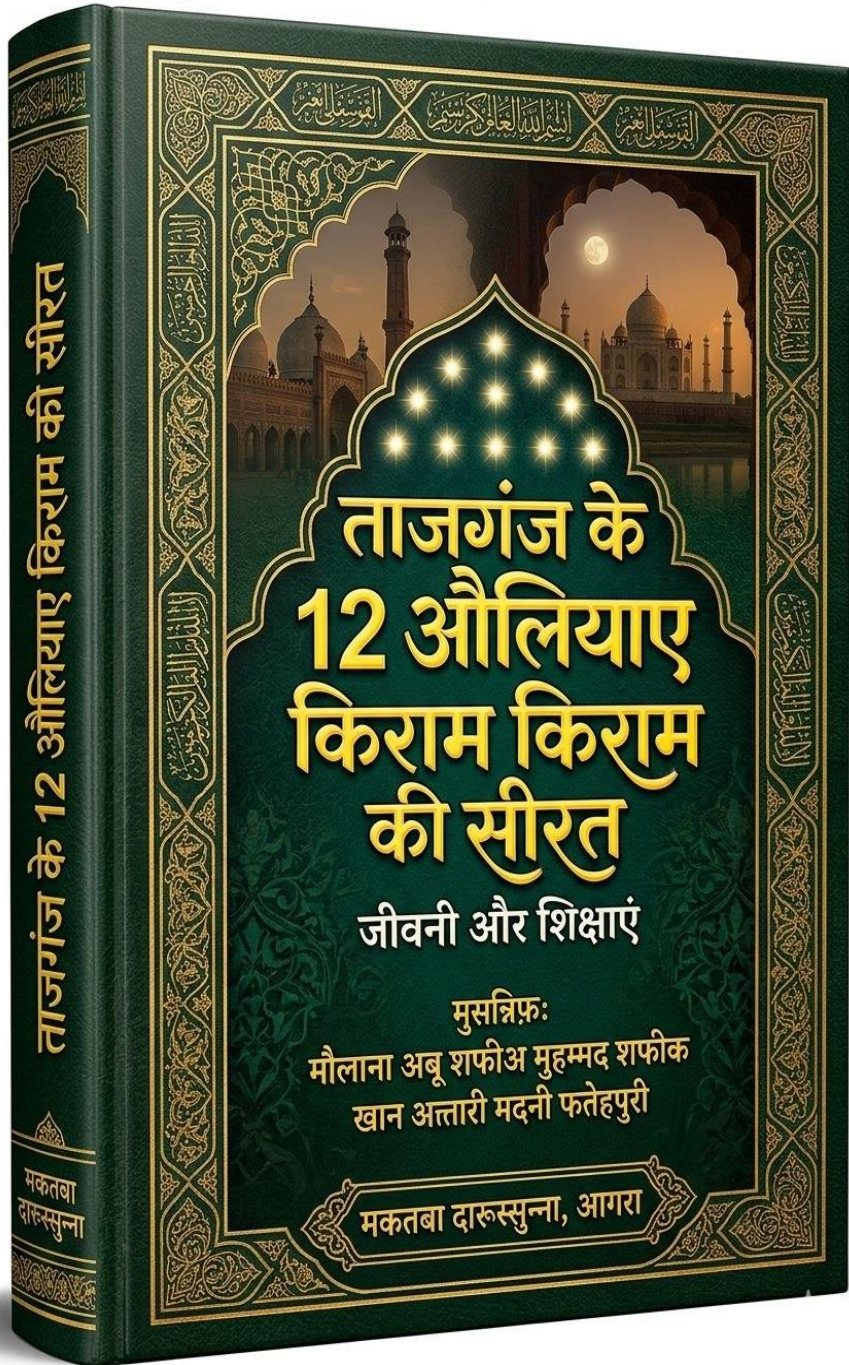
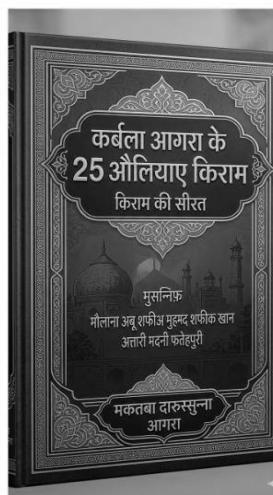
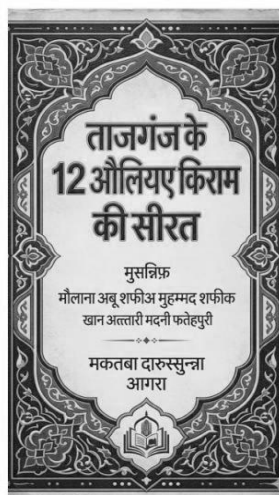
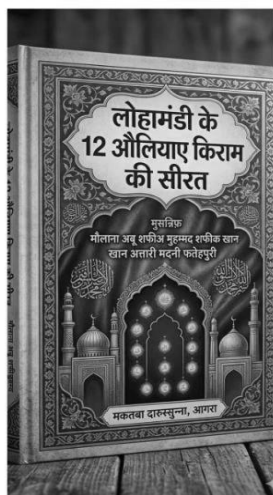
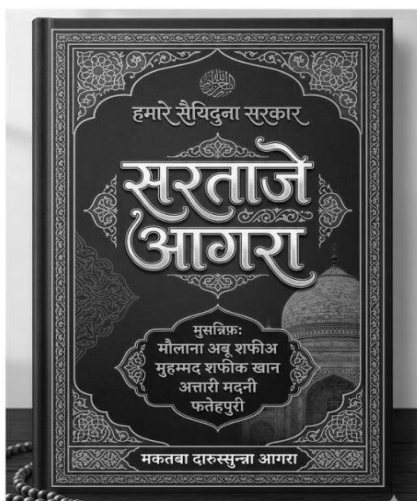
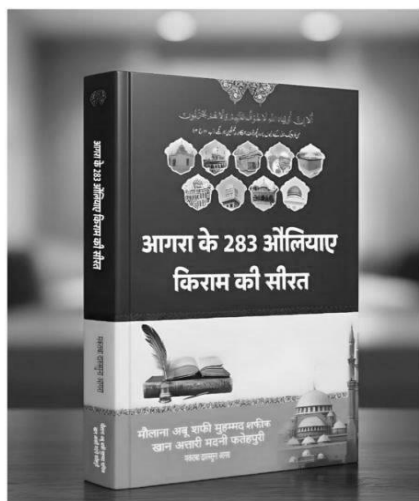




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी



मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है ।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो ।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن دارالافتاء وندیشین مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो ।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़िकरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्क़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक्क़रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 सदकए जारिया का बेहतरीन मौका 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत 700 रुपये रिआयती कीमत 350 रुपये

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत

ताज गंज (आगरा)

(1) सैय्यिद अहमद बुखारी

सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने औलियाए किराम में से हैं, मुफ़स्सल हाल किसी तारीख या तज़िकरे में नज़र से नहीं गुज़रा, आम तौर से मशहूर है कि आप सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के बड़े भाई हैं मगर इस की सेहत में शक है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से शहर वालों खुसूसन ताज गंज के रहने वालों को ख़ास अक़ीदत है, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक निहायत बुलंदो पुरफ़जा मक़ाम पर मुत्तसिल हवेली ख़ांद दरां खान में मौजूद और ज़ियारत गाहे ख़ासो आम है, शाहाने सल्फ़ यानी पहले के बादशाहों के ज़माने से कुछ अराज़ी ज़मीन इस मज़ार के अखराजात यानी खर्च के वास्ते माफ़ यानी वक़फ़ चली आ रही है, जो ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजेंटी है।

जुमा के दिन 25 रजब, 1064 हि को आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख़्तियार फ़रमाया, विसाल की तारीख 'मुनव्वर बहिश्त अज़ अहमद' है जिसके अदद 1064 बनते हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 40)

मौजूदा हालत 2025

सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी देने के लिए दो तरीक़े हैं (1) पैदल। (2) बैट्री वाली बाइक। क्योंकि पेट्रोल या डीज़ल वाली गाड़ी को ताजमहल के आस पास नहीं जाने देते।

लिहाजा ताजमहल के पूरबी गेट से संदली मस्जिद होते हुए आगे बढ़ते जाएं, कुछ दूर चल कर 'अहमद बुखारी क़ब्रिस्तान' के नाम से क़ब्रिस्तान आएगा वहीं पर टाट शाह के नाम से एक क़ब्र बनी हुई है, इस से कुछ दूर आगे चल कर एक टीला नज़र आएगा, उस टीले पर चढ़ने के लिए सीढियां बनी हुई हैं, पहली सीढी के पास गवर्मेन्ट की जानिब से दो लाल रंग के पत्थर लगाए गए हैं जिसमें से एक में इंग्लिश और दूसरे में हिन्दी से यूं लिखा हुआ है:

सैय्यिद अहमद बुखारी की दरगाह

येह कहा जाता है सैय्यिद अहमद बुखारी को अरब के बुखारा शहर से सम्राट शाहजहाँ द्वारा ताजमहल की नींव रखने के लिए बुलाया गया था। वो अपने तीन भाईयों जिनके नाम सैय्यिद जलाल बुखारी, सैय्यिद अमजद बुखारी, सैय्यिद लाल बुखारी थे, के साथ भारत आया था। चारों भाईयों ने ताजमहल स्थल (की जगह) पर पवित्र (पाक) कुरआन का पाठ किया। इस के बाद बादशाह शाहजहाँ ने शिलान्यास (तामीर की शुरूआत) किया और ताजमहल का निर्माड़ (तामीर) शुरू हुआ। इन भाईयों की मृत्यू (वफ़ात) के बाद ताजमहल के चारों ओर (तरफ़) उनकी दरगाह बनाई गई जो इस तरह है सैय्यिद अहमद बुखारी की दरगाह पूरब की तरफ़, सैय्यिद जलाल बुखारी की दरगाह पच्छिम की तरफ़, सैय्यिद लाल बुखारी की दरगाह दक्खिन की तरफ़, और सैय्यिद अमजद बुखारी की दरगाह बलोच पुरा स्थान (जगह) पर है।

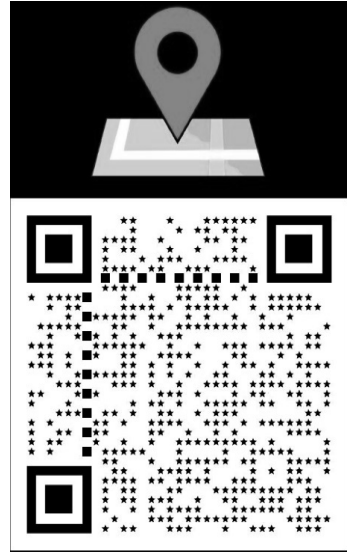
इस टीले पर सीढियों से ऊपर चढ़ जाईए वहीं हज़रत अहमद बुखारी अलैहिर्हिहमा का मज़ार पुर अनवार मौजूद है। येह मज़ार मुबारक ताजमहल के पूरब की जानिब मौजूद है। मज़ार मुबारक के ऊपर पीलू का

दरख्त साया किए हुए है जिसके पुराने होने का अंदाज़ा इस दरख्त को देख कर लगाया जा सकता है। मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी हुई है। मज़ार मुबारक के सिरहाने एक मस्जिद भी बनी हुई है।

और मस्जिद के सामने मेहमान ख़ाना भी बना हुआ है। आप अलैहिर्रहमा का उर्स 25, 26, 27 रजब को होता है।

नोट: मज़ार मुबारक पर नाम और वफ़ात के साल की कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी हुई है और आगरा के कई मज़ारात ऐसे हैं जिनमें तख़्तियाँ नहीं लगी हैं जिसकी वजह से साहिबे मज़ार का नाम और उनकी वफ़ात की तारीख़ का कुछ पता नहीं चल पाता। काश कोई अहले ख़ैर इस नेकी के काम में आगे आए और तमाम मज़ारात पर तख़्तियाँ लगवा दे।

सैय्यिद अहमद बुख़ारी
रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की
Location का **QR Code**
इस को अपने मोबाइल से
Scan कीजिए, आप के
मोबाइल पर **Location** खुल
जाएगी, जिस की मदद से
आसानी के साथ आप मज़ार
मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) सैय्यिद जलाल बुखारी

आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शाह आलम बुखारी अहमदाबादी रहमतुल्लाह अलैह की पांचवीं पुस्त में सैय्यिद मुहम्मद बुखारी रज़वी रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे हैं, 15 जुमादस्सानी 1003 हि ब मुताबिक़ 1594 ई को पैदा हुए, 'वारिसे रसूल' विलादत की तारीख़ है, उलूमे ज़ाहिरी मुल्ला मुहम्मद सूफी माज़ंदरानी की शागिर्दी में और कमालाते बातिनी आपने वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की फ़ैजे तर्बीयत से हासिल किए।

शाहजहाँ बादशाह की तख़्त नशीनी के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से आगरा में तशरीफ़ लाए और दरबारे शाही से ऐज़ाज़ हासिल कर के वापस गए, 1052 हि ब मुताबिक़ 1643 ईस्वी में दोबारा आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए, इस मर्तबा बादशाह ने निहायत इसरार से सदारते कुल के मन्सबे जलीला पर कि जिससे तमाम मुमालिके महरूसा के उलमा, फुज़ला और मशाईखीन वग़ैरा का तअल्लुक था, मुअज़्ज़ज़ कर के मन्सबे चहार हज़ारी (यानी चार हज़ार सिपाहियों का सिपह सालार) मर्हमत किया, चंद अरसे में शश हज़ारी (यानी छः हज़ार) के मन्सब पर तरक्की पाई।

एक जुमादल अव्वल 1057 हि ब मुताबिक़ 1647 ईस्वी को दुनिया ए फ़ानी से फ़िरदौसे बरीं को ख़ाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, "जा नशीने हैदरे करार" आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात की तारीख़ है यानी इस के अदद 1057 बनते हैं।

मज़ार मुबारक ताज गंज के रास्ते में मर्द घटा दरियाए जमुना के किनारे एक बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है और ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

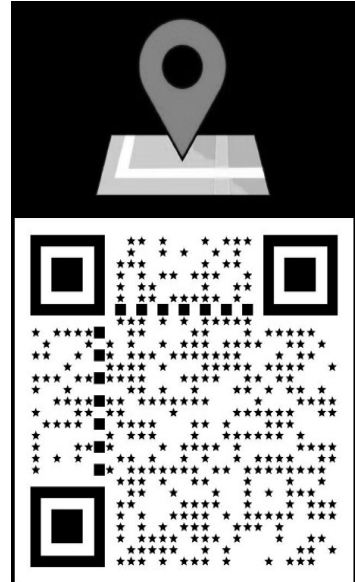
(बोस्ताने अख़्यार, पेज66)

मौजूदा हालत 2025

हजरत जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक निहायत खूबसूरत और ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है आप के मज़ार के दाएं बाएं एक एक मज़ार और बनी हुई हैं जिनके बारे में कुछ पता नहीं चल सका कि वो किन की हैं फिर भी लोगों में मशहूर है कि एक क़ब्र आपके भांजे और दूसरी आपके भातीजे की है। मज़ार मुबारक के क़िब्ला की जानिब एक खूबसूरत मस्जिद भी मौजूद है। और आपके मज़ार मुबारक के नीचे कई सारी क़ब्रें बनी हुई हैं।

उर्स मुबारक 5 रमज़ान को होता है जिसमें कसीर आशिक़ाने औलिया शिरकत करके फ़ैज़ हासिल करते हैं।

सैय्यिद जलाल बुखारी
रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की
Location का **QR Code**
इस को अपने मोबाइल से
Scan कीजिए, आप के
मोबाइल पर **Location** खुल
जाएगी, जिस की मदद से
आसानी के साथ आप मज़ार
मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(3) मौलाना ज़ियाउद्दीन बलूखी

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह इनायत क़ारी शत्तारी लाहौरी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा ए आजम और बड़े साहिबे बातिन और आरिफ़े कामिल बुजुर्ग थे, मशहूर है कि चालीस बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह को बुखार आया।

मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह (जिन का मज़ार मुबारक पंजे मदरसा आगरा में मौजूद है) पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मुरीद व मोतकिद थे और आप रहमतुल्लाह अलैह ही के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह शाह क़ादरी बगदादी रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में हाज़िर हो कर उनके मुरीद हुए, हज़रत मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ़ में एक क़सीदा कहा है जो उनके दीवान में मौजूद है।

तसव्वुफ़ में आप रहमतुल्लाह अलैह का रिसाला बनाम 'क़तरुन्नजात' यादगार है, जिसका क़लमी नुस्खा हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाने में मौजूद है जो कि सुई कटरा आगरा में है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के करीब जानिबे मग़रिब वाक़ेअ और ज़ियारत गाह है, तारीख़े रिहलत येह है

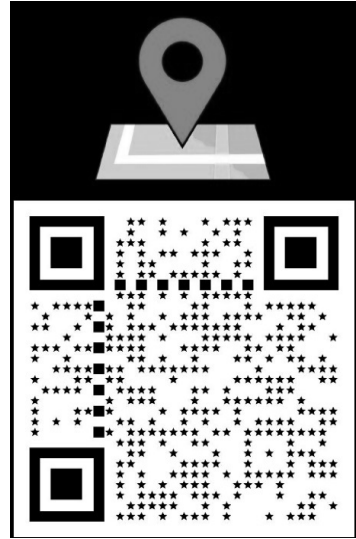
सरवरे आरिफ़ाने बा तमकीं
चूँकि शुद अज़ जहां ब खुल्दे बरीं
साल नक़लश ब जुस्तम अज़ दिल ख्वेश
गुफ़्त मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन

'मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन' के अदद 1193 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 91)

मौजूदा हालत 2025

हजरत जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मजार मुबारक के आस पास बहुत से कब्रें बनी हैं काफ़ी पता करने के बाद भी आपके मजार का कुछ पता ना चल सका। लेकिन बाद में एक शख्स से मुलाकात हुई तो उन्होंने बताया कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मजार मुबारक वही है जो अब हाफ़िज़ साहिब के मजार से मशहूर है। और येह मजार जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मजार मुबारक के नीचे मौजूद है।

सैय्यिद जलाल बुखारी
रहमतुल्लाह अलैह के मजार की
Location का **QR Code** इस
को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ
आप मजार मुबारक तक पहुँच
सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की
सीरत की **Video** देखने और सुनने
की लिए इस **QR Code** को
Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



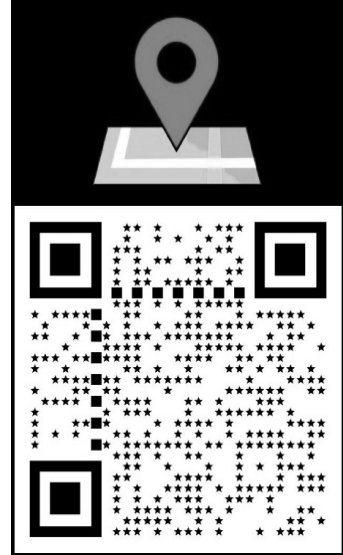
(4) हज़रत शैख नुरुल्लाह कादरी

हज़रत शैख नुरुल्लाह कादरी बिन शैख सलीमुल्लाह बिन काज़ी मुहम्मद इस्माईल मद्रासी रहमतुल्लाह अलैह ने रस्मी उलूम हासिल करने के बाद अपने भाई मुफ्ती शैख अब्दुल वहहाब के साथ आगरा आये और थाना ताजगंज आगरा में थाने दार मुकर्रर हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह सूफी मुंशी बुजुर्ग थे, शाईरी से भी ज़ौक था, आबाद तखल्लुस करते थे, कलाम सूफियाना होता था।

हज़रत मौलवी अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे, 15 शब्वाल में विसाल फरमाया और मज़ार मुबारक दरगाह सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह में है। (महताबे अजमेर पेज 111)

सैय्यिद जलाल बुखारी
रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की
Location का **QR Code**
इस को अपने मोबाइल से
Scan कीजिए, आप के
मोबाइल पर **Location** खुल
जाएगी, जिस की मदद से
आसानी के साथ आप मज़ार
मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(5) सैय्यिद हामिद बुखारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के बुजुर्गों में से हैं, अवामुन्नास आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह का भाई बतलाते हैं, आपका मज़ार थाना ताजगंज के अंदर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज70)

(6) सैय्यिद मुहम्मद बुखारी

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार थाना ताजगंज के अंदर वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई मशहूर और आगरा के मशहूर औलिया अल्लाह में शुमार होते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सही तारीख़ो हालात से ला इल्मी है यानी आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात मालूम ना हो सके। (बोस्ताने अख्यार, पेज156)

मौजूदा हालत 2025

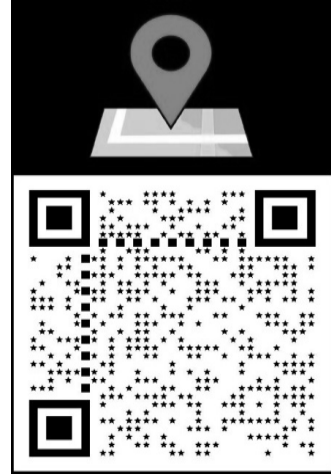
ताजगंज थाना के अंदर सिर्फ़ एक मज़ार मुबारक है जिसमें कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी, आस पास के मुस्लिमनों से पता किया तो उन्होंने बताया कि येह मज़ार अमजद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह की है जो कि अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई हैं।

और हज़रत सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के पास गवर्मेन्ट की जानिब से जो पत्थर लगाया गया है उस में येह लिखा है : “सैय्यिद अमजद बुखारी की दरगाह बिलोच पुरा स्थान (जगह) पर है”

लेकिन बोस्ताने अख्यार के मुसन्निफ़ अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने ताजगंज थाना के अंदर दो बुजुर्गों के मज़ारों का तज़्किरा

किया है एक सैय्यिद हामिद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे सैय्यिद मुहम्मद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह । हक़ीक़ते हाल क्या है पता नहीं ।

ताजगंज थाने के अंदर के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं ।



तेली पाड़ा (ताजगंज)

(7) सैय्यिद अज़मत बुखारी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और हामिद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्ग बयान किये जाते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुहल्ला तेली पाड़ा ताजगंज में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 123, 124)

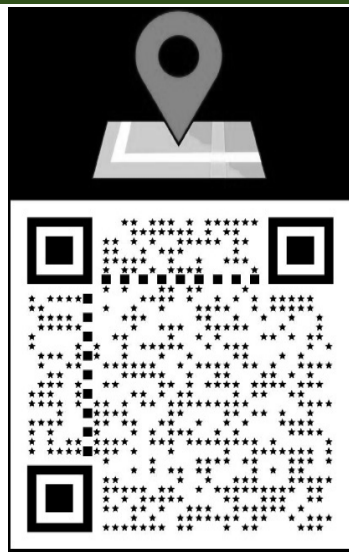
मौजूदा हालत 2025

हज़रत सैय्यिद अज़मत बुखारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ताजमहल से दक्खिन की जानिब वाक़ेअ है, लोगों में लाल बुखारी के नाम से मशहूर हैं। तेली पाड़ा ताजगंज की 'रज़ा उस्मानी' मस्जिद के पास गली के अंदर मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पर भी नाम और तारीखे वफ़ात की कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी।

नोट: आगरा के कई औलियाए किराम के मज़ारात ऐसे हैं जिनमें तख़्तियाँ नहीं लगी हैं जिसकी वजह से साहिबे मज़ार का नाम और उनकी वफ़ात की तारीख का कुछ पता नहीं चल पाता। और इस की वजह से बाज़ औलियाए किराम के नाम भी बदल गए हैं। काश कोई अहले ख़ैर इस नेकी के काम में आगे आए और तमाम मज़ारात पर तख़्तियाँ लगवा दे।

तेली पाड़ा और आस पास के आशिकाने औलिया से गुज़ारिश है कि सैय्यिद अज़मत बुखारी रहमतुल्लाह अलैह का उर्स ख़ूब धूम धाम से पाबंदी के साथ मनाया करें ताकि हमारी आने वाली नस्ल को तरगीब मिलती रहे।

सैय्यिद अज़मत बुखारी
रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की
Location का **QR Code** इस
को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ
आप मज़ार मुबारक तक पहुँच
सकते हैं।



गली मल्कान ताज गंज(मल्कों गली)

(8) शाह मुजाहिदुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुबारिज़ुद्दीन इब्ने सैय्यिद गुलाम
मूर्तज़ा इब्ने सैय्यिद जलालुद्दीन इब्ने सैय्यिद मुहीय्युद्दीन इब्ने मीर
रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंदे रशीद यानी बेटे
हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत बा बरकत और खुदा शनास बुज़ुर्ग थे।

शाहजहाँ बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक्रिद और
शाहजहाँ बादशाह की बीवी “सरहिन्दी बेगम” आप रहमतुल्लाह अलैह की
मुरीद थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुहल्ला ताजगंज में मल्कों
की गली की मस्जिद के पीछे वाक़ेअ है, जिस पर क़दम शरीफ़ नसब लगा

हुआ है और 1107 हि तारीख और येह शेअर भी एक पत्थर पर लिखा हुआ है।

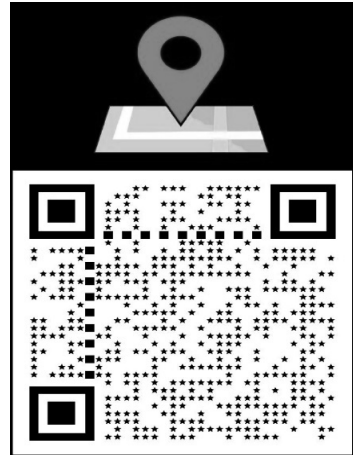
तारीख बिना अलकरीम फ़ी वक्ई कलामिल करीम
रूहो रैहान व जन्नातुन्नईम
फ़िदाए रसूल अस्त व औलादे ऊ
चू सिद्दीक अज जाने मुहम्मद करीम

(बोस्ताने अख्यार, पेज 153.154)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ताजगंज के मुहल्ला मल्कों गली की पंजे मस्जिद के मेहराब के पीछे वाक़ेअ है, मज़ार पर कोई तख्ती वगैरा नहीं लगी मगर सिरहाने ऊपर की जानिब ऊपर बयान किया हुआ शेअर लिखा है और आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर क़दम शरीफ़ का नक्श भी मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दाएं बाएं एक एक क़ब्र बनी हुई है, येह क़ब्रें किन की हैं कुछ पता नहीं चल सका। मज़ीद मज़ार मुबारक की चहार दीवारी के अंदर कई सारी क़ब्रें मौजूद हैं।

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(9) मौलवी मुहम्मद काज़िम

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलवी दोस्त मुहम्मद इब्ने सैय्यिद शाह मुहम्मद इब्ने सैय्यिद पीर मुहम्मद इब्ने सैय्यिद शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंद रशीद और मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं, इल्मो फ़ज़ल से मौसूफ़ और निहायत बुजुर्ग व बाबरकत शख्स थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मस्जिद मल्कों की गली की पुश्त पर शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के करीब वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल 1199 हि है।

आप रहमतुल्लाह अलैह की मुहर राक़िमे बोसतान की नज़र से गुज़री है जिस पर सैय्यिद मुहम्मद काज़िम वल्द सैय्यिद दोस्त मुहम्मद 1191 हि लिखा हुआ था। (बोस्ताने अख्यार, पेज 199)

माहताबे अजमेर

माहताबे अजमेर नामी किताब में हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद काज़िम रहमतुल्लाह अलैह का तज़्किरा कुछ यूं लिखा हुआ है :

हज़रत मौलवी शाह मुहम्मद काज़िम कादरी रहमतुल्लाह अलैह हसनी हुसैनी सैय्यिद, निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार, बड़े बाबरकत आलिमे बा अमल, सूफ़ी बा सफ़ा, वलिये कामिल, बदर जहां, मुतावक्किल, अल्लाह पाक पर तवक्कुल के इलावा आप रहमतुल्लाह अलैह की कोई मआश ना थी।

सिल्सिलए क़ादरिया में मुंसलिक, हज़रत सैय्यिद शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह से चौथे वास्ता में और हज़रत सैय्यिद शाह

रफ़ीउद्दीन सफ़वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से नौवें वास्ते में मुंसलिक थे ।

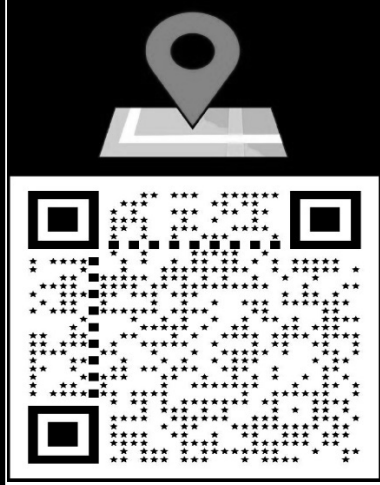
एक मर्तबा आगर के सूबेदार ने आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात व तवक्कुल का हाल मालूम करके अपने ख़ास बावर्ची ख़ाना का खाना ख़वानों में लगा कर आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते भेजा, पयाम ले जाने वाले से सूबेदार ने कहा: कि हज़रत से दस्त बस्ता अर्ज़ करना: आज से इसी तरह खाना आया करेगा । जब आप रहमतुल्लाह अलैह को पेश किया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने खाना वापस कर दिया और कहा कि ये खाना हमारे पास ना लाना, हमारे तवक्कुल में फ़र्क़ आ जाएगा । हमें हमारा माबूद यानी अल्लाह पाक अपने ख़वाने नेअमत से अता फ़रमाता है और वही काम का है ।

आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 5 शाबान 1199 हिजरी को हुआ । आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आगरा में है । (माहताबे अजमेर पेज 113)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मौलवी मुहम्मद काज़िम रहमतुल्लाह अलैह शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह पोते हैं आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा के पास है मगर मज़ार पर तख्ती ना होने की वजह से कुछ पता नहीं चलता, लेकिन बोस्ताने अख्यार के मुसन्निफ़ अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने लिखा है कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मस्जिद मल्कों की गली की पुश्त पर शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के करीब वाक़ेअ है। लिहाज़ा इस इबारत से यही मालूम होता है कि मस्जिद के मेहराब से मिली हुई जो मज़ार है शायद यही आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार हो । वल्लाहु आलम

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह
के मज़ार की **Location** का **QR**
Code इस को अपने मोबाइल से
Scan कीजिए, आप के मोबाइल
पर **Location** खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ आप
मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



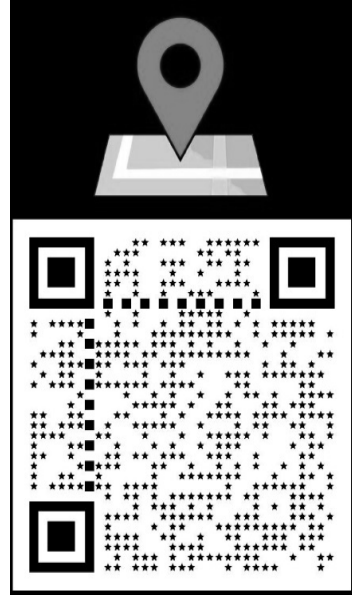
(10) सैय्यिद इमाम अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी
अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा और आगरा के मुताअख़िख़रीन
यानी बाद में होने वाले मशाईख़ीन में हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह मुहल्ला नमक
की मंडी के रहने वाले थे, **मज़ार मुबारक** इहातए दरगाह मीर
मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह में मुत्तसिल मस्जिद गली मल्कान ताजगंज
वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 52)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत सैय्यिद इमाम अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक
पर तख़्ती ना होने की वजह से कुछ पता नहीं चल सका कि आप रहमतुल्लाह
अलैह की मज़ार मुबारक कौन सी है ? लेकिन ये बात तै है कि हज़रत शाह
मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की चहार दीवारी के अंदर ही है।

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह
अलैह के मजार की **Location**
का **QR Code** इस को अपने
मोबाइल से **Scan** कीजिए,
आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी,
जिस की मदद से आसानी के
साथ आप मजार मुबारक तक
पहुँच सकते हैं।



खरादी टोला (खैराती टोला)

(11) शाह मुहम्मद चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह खानवादए चिशितया के सिल्क में मुंसलिक हैं, बड़े साहिबे बातिन और तारीकुद्दुनिया (यानी दुनिया को छोड़ने वाले) बुजुर्ग थे, सक्रा (यानी पानी पिलाने वाले अब्बासी) के लिबास में अपने कमालात को छुपा रखा था, बंदगाने खुदा को पानी पिलाया करते थे, दिन में सिर्फ पाँच टके का पानी फ़रोख्त यानी बेचा करते इस में से पाँच पैसे खैरात कर देते और पाँच पैसे की शीरीनी मंगा कर फ़ातिहा पढ़ कर तक्रसीम कर देते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह की येह करामत अब तक मशहूर चली आती है कि हर शख्स की ख्वाहिश के मुताबिक़ एक ही मश्क से दरिया या कुँवें

का पानी निकाल कर देते थे, बहुत से लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह की बंदौलत रुहानी फ़ैज़ हासिल हुआ, हकीम नूरुद्दीन अकबराबादी आपके निहायत मो'तक्रिद थे और इब्तिदा में अज़ली इनायत ने आप रहमतुल्लाह अलैह ही की नज़रे कीमिया असर के ज़रीये से उनकी दस्तगीरी फ़रमाई थी, चुनांचे अब तक उनका कुल ख़ानदान आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से ख़ास अक़ीदत रखता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुहल्ला ख़रादी टोला में वाक़ेअ है जो पब्लिक पार्क के दर्मियान और ताजगंज के रास्ते में है, 12 रबीउल अव्वल को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज 157.158)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शाह मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ख़ैराती टोला के इमाम बाड़े के बाज़ू में मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर जाने का आसान रास्ता पुरानी मंडी चौराहे से बिजली घर की तरफ़ जाते हुए रास्ते में उल्टे हाथ की जानिब सफ़ेद पत्थर का बना हुआ एक ऊंचा गेट है जिस पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ और पूरी सूरह फ़ातिहा लिखी हुई है और गेट के दाएं जानिब 'बाबुरिज़्ज़वान' और बाएं जानिब 'बाबुल गुफ़रान' और बीचो बीच 'ख़ैरादी टोला' उर्दू से लिखा हुआ है। इस गेट से अंदर जा कर ख़ैराती टोला की आबादी आ जाएगी, आबादी में कुछ अंदर जा कर इमाम बाड़ा आएगा, उस इमाम बाड़े के पास आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दाएं बाएं दो क़ब्रें और बनी हुई हैं वहां के रहने वालों से पूछा तो बताया कि दाएं जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह

के वालिद की क़ब्र है और बाएं जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह की माँ की क़ब्र है। वल्लाह आलम

वालिद की क़ब्र	हज़रत शाह मुहम्मद चिश्ती का मज़ार	माँ की क़ब्र
पच्छिम	गेट	पूरब

आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 11, 12 रबीउल अब्बल को होता है, आप रहमतुल्लाह अलैह जिस कुँवें से पानी निकाला करते थे वो कुँआं आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के क़रीब ही था जो अब मौजूद नहीं। मज़ार मुबारक के पास रहने वाले एक उम्र रसीदा बुज़ुर्ग ने आप रहमतुल्लाह अलैह की एक करामत येह भी बयान की कि जिस खाने की ख्वाहिश कर के जो शख्स आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आता वही गर्मा गर्म खाना आप रहमतुल्लाह अलैह के पास पाता और आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते: जाओ खाना खा लो।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के हट कर कुछ फ़ासले पर एक चहार दीवारी के अंदर कई मज़ारात बने हुए हैं। और पास ही एक मस्जिद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है:

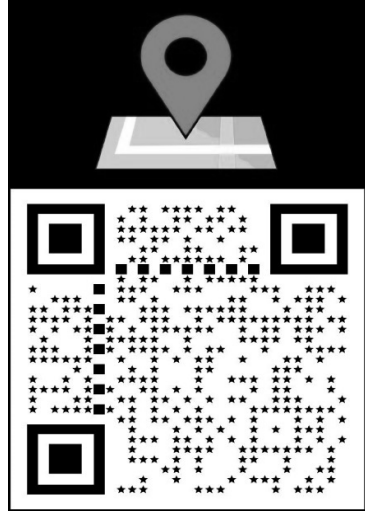
अल्लाह

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदु रसूलुल्लाह
शाह मुहम्मद शाह

वफ़ात तारीख 11 रबीउल अब्बल 1332 हिजरी बमुताबिक 1912 ईस्वी

शाह मुहम्मद चिश्ती के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



फूल सैय्यिद चौराहा (तजगंज रोड, अमर होटल के पास)

(12) शैख फूल मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह मज्ज़ूबाने साहिबे कमाल और आशिक्राने नामदार में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की ज्ञात से खराबात वीरानियाओं का मकान ज़्यादा रौनक पाता था, बहुत से खिरक़े आदात आप रहमतुल्लाह अलैह से सरज़द हुए, मटिया महल मुत्तसिल थाना रकाबगंज में ज़मीन के अंदर एक ग़ार खोद कर ऊपर से खसपोश यानी घास वगैरा डाल लिया था, उसी में रहा करते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मशहूर मारुफ़ और फूल सैय्यिद के नाम से मौसूम ज़ियारत गाह खासो आम है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 61)

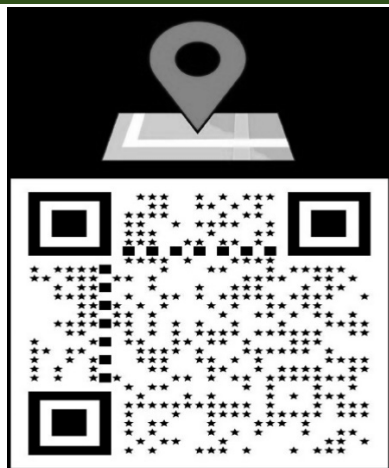
मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख फूल मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का आसान रास्ता यह है कि फ़तेहाबाद रोड से आगरा कैन्ट की जानिब जाते हुए ताज व्यू के आगे अमर होटल पड़ेगा, अमर होटल से आगे बढ़ते हुए जो पहला चौराहा आएगा उस चौराहे का नाम फूल सैय्यिद चौराहा है इस चौराहे से पुरानी मंडी की तरफ़ जाने वाले ताज रोड पर आईए, चौराहे से मुत्तसिल उल्टे हाथ पर मज़ार मुबारक मौजूद है, मज़ार के ऊपर सफ़ैद रंग का गुंबद बना हुआ है और मज़ार के बाज़ू में मस्जिद भी मौजूद है। मज़ार मुबारक की तख्ती पर "हज़रत बाबा फूल शाह" रहमतुल्लाह अलैह लिखा हुआ है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के पूरब की जानिब दो क़ब्र और बनी हुई हैं जिनमें से एक जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से मुत्तसिल है वो आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के ख़ादिम बाबा ग़फ़ूर शाह की और उसके बाज़ू में बाबा बहादुर शाह की क़ब्र है। बाबा ग़फ़ूर शाह, बाबा बहादुर शाह के बेटे हैं। और अब जो मज़ार की देख भाल करते हैं वो बाबा ग़फ़ूर शाह के बेटे बाबा शकील हैं।

मस्जिद	शैख फूल मज्ज़ूब की मज़ार	बाबा ग़फ़ूर शाह की क़ब्र	बाबा बहादुर शाह की क़ब्र
पच्छिम -----गेट-----पूरब			

शैख फूल मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक 13 ज़िलहिज्जा यानी बक्ररईद की 13 तारीख को बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। लिहाज़ा आशिकाने औलिया से गुजारिश है कि उर्स में शरीक हो कर इनका फ़ैज़ान हासिल करें।

शैख फूल मज्ज़ूब के मज़ार की
Location का **QR Code** इस
को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ आप
मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की
सीरत की Video देखने और सुनने
की लिए इस QR Code को
Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



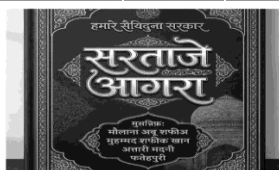
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाज़ों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाज़ों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	कुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	कुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720

24	आसान खुत्बाते मुहर्रम	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435

50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख़ साज़ शख़्सियत बनने के फ़ॉर्मूले	उर्दू	135
57	फ़ैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फ़ैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मतु मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फ़ॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफ़ीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीक़िया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक्कहे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फ़लाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ़ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	गुलशने वजाइफ़	उर्दू	64
74	इफ़्तिखारे नक्रिय्यह अल मारुफ़ फ़र्ज़नदाने आगरा	उर्दू	300
75	खतमे कुरआन की फ़ज़ीलत और मसाइल	उर्दू	32

76	सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
77	ताजगंज के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
78	लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
79	हींगमंडी और नाईमंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
80	सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
81	सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलिया की सीरत	हिन्दी	32
82	शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
83	बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
84	नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलिया की सीरत	हिन्दी	48
85	कब्रिस्तान पीर गीलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
86	कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
87	आगरा के गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
88	जमना पार आगरा के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
89	मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
90	तज़क्रकुरे विसाल औलिया का विसाल दर महीना व साल	उर्दु	514
91	हफ़ों के राज़	उर्दु	200



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे खुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
खानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते खुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की खाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की खाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औकात क्या बेखुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेखुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया
भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुजुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया
आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया
निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया
हक़ लिखा, बेबाक़ लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक़ फ़ितने को यूँ धमका दिया
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान



आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की

आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की
जिंदगी भर काम आएँ खूबियाँ इस्लाम की
अदल है, इन्साफ़ है, उल्फ़त, रहम की बात है
किस तरह कोई मिटाए खूबियाँ इस्लाम की
दूर से ही रुख से तेरे सुन्नतें छलका करें
पैरहन में मुस्कराए खूबियाँ इस्लाम की
कुफ़्र की जुल्मत में डूबा जिस जगह इंसान हो
उस जगह फिर जगमगाए खूबियाँ इस्लाम की
नूर बन कर दिल में उतरेगी उसी की बात फिर
जो कोई अपनाते जाएँ खूबियाँ इस्लाम की
क्रौम की तकदीर बन जाते हैं वो माँ बाप जो
अपने बच्चों को सिखाएँ खूबियाँ इस्लाम की
येह फ़रीज़ा है हमारा, दीन का फ़रमान भी
हर कदम अपनाते जाएँ खूबियाँ इस्लाम की
इस तरह बतलाओ बेखुद, अपने तो अपने मगर
ग़ैर भी फिर जान जाएँ खूबियाँ इस्लाम की

वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान



फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
नाम और निस्बत	3
दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म	3
तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत	4
खिलाफ़तो इजाज़त	5
खिदमते दीन	5
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा.....	6
आगरा के औलिया का मुख़्तसर तआरुफ़.....	7
ख़ानवादए चिशितया के बुज़ुर्ग़ाने दीन.....	8
ख़ानवादए नक़््शबंदिया के बुज़ुर्ग़ाने दीन	8
ख़ानवादए शत्तारिया के बुज़ुर्ग़ाने दीन.....	9
ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्ग़ाने दीन.....	9
आगरा शहर का आबाद होना	10
सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद	11
दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा.....	11
ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	14
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत.....	15
❧ सदक़ए ज़ारिया का बेहतरीन मौक़ा ❧	17
ताजगंज के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत	18
ताज गंज (आगरा).....	18
(1) सैय्यिद अहमद बुख़ारी.....	18
(2) सैय्यिद जलाल बुख़ारी	21
(3) मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्खी	23
(4) हज़रत शैख़ नुरुल्लाह कादरी	25

(5) सैय्यिद हामिद बुखारी.....	26
(6) सैय्यिद मुहम्मद बुखारी	26
तेली पाड़ा (ताजगंज)	28
(7) सैय्यिद अज़मत बुखारी.....	28
गली मल्कान ताज गंज(मल्कों गली).....	29
(8) शाह मुजाहिदुद्दीन	29
(9) मौलवी मुहम्मद काज़िम	31
(10) सैय्यिद इमाम अली शाह.....	33
खरादी टोला (खैराती टोला).....	34
(11) शाह मुहम्मद चिश्ती.....	34
फूल सैय्यिद चौराहा (तजगंज रोड, अमर होटल के पास)	37
(12) शैख फूल मज्ज़ूब	37
मुत्तिब की किताबों का तआरुफ़	40

आगरा के औलियाए किराम की
सीरत की Video देखने और सुनने
की लिए इस QR Code को
Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		